आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023
Received: 20/12/2023; Published: 26/12/2023

सुब्रह्मण्यम भारती की कविता "स्वतंत्रता"

साभार आधुनिक भारतीय कविता

- संपादक. डॉ.अवधेश नारायण

डॉ.नंदेकिशोर पाण्डेय

स्वतंत्रता
स्वतंत्रता स्वतंत्रता स्वतंत्रता
है स्वतंत्रता भंगी और चर्मकारों को।
है स्वतंत्रता आदिवासियों, बंजारों को ॥
क्षमता के अनुकूल सभी उद्योग चलायें।
उच्च ज्ञान, शिक्षा पा जीवन सुखद बनाएँ।
सबको मिली देश में आज स्वतंत्रता।
स्वतंत्रता स्वतंत्रता स्वतंत्रता ॥ १ ॥

बृहद् जाति में नहीं अकिंचन, दास न कोई।
अब भारत में नीच व्यक्ति का नाम न कोई।
शिक्षित हों, समुचित धन धान्य सभी जन पायें |
आपस में हिलमिल समता का समय बिताएँ।
सबको मिली देश में आज स्वतंत्रता ॥
स्वतंत्रता स्वतंत्रता स्वतंत्रता ॥ २ ॥

जिससे जन नर से नारी को नीचा जाने।
हम अपनी वह अज्ञानता दूर कर डालें।
तोड़ दासता को जीवन को सुखी बनावें। '

नर नारी समान है' यह सद्भाव जगावें ||
सबको मिली देश में आज स्वतंत्रता
स्वतंत्रता स्वतंत्रता स्वतंत्रता ॥ ३ ॥

****